कोसी क्षेत्र के लोगों का जनजीवन–एक अध्ययन

डॉ0 नरेश मोहन

मिथिला प्राचीन काल से ही अपनी विशेषताओं के लिए प्रख्यात रही है। सामाजिक, बौद्धिक, सांस्कृतिक आदि सभी क्षेत्रों में इसका अपना अस्तित्व रहा है। धर्मग्रंथों में उल्लिखित आचार–विचार, रीति–नीति आदि पर इसकी संस्कृति आधारित रही है। यद्यपि भारत वर्ष में ज्ञान– विज्ञान एवं पारम्परिक शिक्षा का केन्द्र काशी रही है किन्तु धर्मशास्त्र एवं दर्शन की भूमि मिथिला ही रही है। आज भी कहा जाता है कि यहाँ हर कंकड़ में शंकर का वास है। परिणामतः इतने तर्क–विर्तक विभिन्न पहलुओं पर होते हैं कि सन्देह की गुंजाइस नहीं रह जाती। मिथिला के पारम्परिक खाद्य एवं पेय का अनुशील से भी इसकी यथार्थता की पुष्टि होती है। विभिन्न शताब्दी के प्राप्त ग्रंथों में खान–पान का किसी न किसी रूप में उल्लेख है ही। अद्यावधि इसकी प्रासंगिकता है। यहाँ के इतिहास का अध्ययन करने से स्पष्ट होता है कि इस क्षेत्र में मुसलमान, भोट, चीनी, अंग्रेज आदि आक्रमणों से इनकी संस्कृति का कुछ न कुछ प्रभाव यहाँ की संस्कृति इतिहास पर पड़ा। प्राचीन संस्कृत वाङ्गमय और अभिलेखों में कोशी के प्रवाह क्षेत्र का भव्य रूपांकन हुआ है। वाल्मीकि रामायण, महाभारत, विष्णुपुराण, वाराहपुराण, श्रीमद्भागवत, कुमारसंभव आदि में ऋषि–मुनियों के तटवर्ती आश्रम, नदी तीर्थ, संगम स्नान आदि के अतिरिक्त ताम्र अभिलेख (गुप्तकाल) आदि इसके ज्वलंत उदाहरण है। डॉ0 प्रकाश चरण प्रसाद ने इसे "कुशिक संस्कृति'' का अभिलेखिय प्रमाण कहा है (कोशी महोत्सव)।